उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अध्ययन आदतों पर रचनावादी उपागम आधारित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन

पी-एच.डी. शिक्षाशास्त्र उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

की रूपरेखा

निर्देशक

प्रो० ए. के. कुलश्रेष्ठ

शोधार्थिनी

दिव्यानन्दनी आर्य

पैडागोजिकल साइंसेस विभाग, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी),

दयालबाग, आगरा – 282005

2022

प्रस्तावना-

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों से पृथक करती है। शिक्षा विकास का मूल साधन है। इसके माध्यम से मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। बच्चे के जन्म के बाद उसके माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा उसे बोलना, सुनना सिखाते है। जब तक तीन-चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना-लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु में उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा सुनियोजित ढंग से चलती है इस प्रकार सीखने-सिखाने का क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन भर समाज व अनुभवों द्वारा शिक्षा की विस्तृत प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। कक्षाकक्ष परिस्थिति में सम्पूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी शिक्षक एवं पाठ्यवस्तु सम्मिलित होकर शिक्षण एवं अधिगम उपागम का निर्माण करते हैं। परम्परागत शिक्षण में पूर्ण रूप से शिक्षक के अधिकार में होता था जिसमें पाठ्यवस्तु के निर्माण, कक्षा में सम्पादन एवं अधिगम से संबंधित प्रत्येक पहलू में शिक्षक की भूमिका निर्णायक होती है। परंतु आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा शिक्षक केन्द्रित उपागम (Teacher Centred Approach) को नकारते हुए विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुरूप उपयुक्तता के आधार पर विद्यार्थी केन्द्रित (Child Centred) उपागम का चयन करना होता है। अधिगम में बालक का सर्वांगीण विकास ही विद्यार्थी केन्द्रित उपागम का मुख्य उद्देश्य है। गतिविधि आधारित अधिगम (Activity based learning approach) इस उपागम का एक उदाहरण है जो कि अब स्कूलों द्वारा बहुत बड़ी संख्या में अपनाया जा चुका है। रचनावाद उपागम (Constructivist Approach) इस सिद्धान्त पर आधारित है कि अधिगमकर्ता अपने ज्ञान का पूर्व अनुभवों के आधार पर एवं सामाजिक वातावरण के साथ अंतक्रिया करके सृजन करता है। ऐसे अधिगम में सहायक के रूप में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। "शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों की पूर्ण अभिव्यक्ति है" स्वामी विवेकानन्द की पत्रावली 1,114, (2015) (गुप्ता, एस.पी., 2002) रचनावादी उपागम से तात्पर्य उस उपागम से है जो यह मानता है कि व्यक्ति (अधिगम कर्ता) अपने सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण से अंतर्क्रिया कर जो भी अनुभव करता है, उन अनुभवों के आधार पर अपनी मानसिक रूपरेखा पर प्रतिबिम्बीकरण कर वह स्वयं अपने ज्ञान व समझ का निर्माण अपने सामाजिक संदर्भ के अन्तर्गत करता है। इस कारण से सामाजिक विषय जैसे

अपेक्षाकृत अधिक सैद्धांतिक प्रकृति वाले विषयों में शिक्षण के लिए यह उपागम और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। चूंकि सामाजिक विषयों को नीरस तथा अनुपयोगी विषय माना जाता है उनको विज्ञान से कम महत्व दिया जाता है अतः इस पर जोर दिये जाने की आवश्यकता है कि सामाजिक, सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक क्षमता के विकास में वृद्धि हो। इस बात पर जोर दिया जाना जरूरी है कि अवधारणाओं की समझ और सामाजिक व राजनैतिक यथार्थ के विश्लेषण की क्षमता के विकास का प्रयास हो, न कि रटने पर बल हो।

शिक्षा मानव जीवन के विकास की निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था तक चलती रहती है। बालक के अधिगम को आनन्ददायक अनुभव बनाने के लिए अधिगम वातावरण तैयार किया जाता है जिसमें शिक्षक मार्गदर्शन, नेतृत्वकर्ता और पर्यवेक्षक का कार्य करता है।

रचनावादी उपागम पर शिक्षण प्रदान करने के लिए शोधकर्त्री द्वारा कक्षा सात की सामाजिक विषय की विषयवस्तु से इतिहास भूगोल एवं नागरिकशास्त्र की पाठ्ययोजनाओं का निर्माण किया जायेगा। विद्यार्थियों द्वारा सक्रिय रूप से ज्ञान सृजन कर शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में रचनावादी उपागम के अनुप्रयोग कर इस उपागम की सार्थकता स्पष्ट करता हैं रचनावादी कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों को ज्ञान के निर्माण के लिए संपूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जाती है ताकि वे अधिगम की प्रक्रिया में प्रतिभाग कर सक्रिय रूप से अपने ज्ञान, अबबोध व अर्थ की रचना कर सकें। विद्यालय सीखने का केन्द्र होते हैं यहाँ शिक्षक विभिन्न प्रकार की क्रियाओं के माध्यम से बच्चे संज्ञानात्मक अथवा बौद्धिक विकास करते हैं इस संपूर्ण क्रियाओं का प्रभाव बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। जिससे सूचनाओं एवं तथ्यों के स्थान पर विद्यार्थी अन्तर्क्रियात्मक भूमिका में आकार विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अन्वेषण कर स्वंय अर्थ सृजित करते हैं।

शिक्षण अधिगम की शैक्षणिक प्रक्रियाओं में अनेक अधिगम सिद्धांतों के बीच अनुभव (Experience), निरीक्षण (Inspection), प्रलेखन (Documentation), विश्लेषण (Analysis) तथा चिंतन (Thinking) द्वारा छात्रों के चारों ओर संसार की रचना करके उनके ज्ञान का विकास करने में रचनावाद का अपने आप में अद्वितीय प्रयास है। रचनावाद द्वारा प्रभावित शैक्षिक दार्शनिक विचार धारायें प्रमुख रूप से प्रगतिवाद (Progressivism), पुनर्सरचनावाद (Reconstructivism), अस्तित्ववाद (Existentialism) व प्रयोजनवाद (pragmatism), पर आधारित रही है। जीन पियाजे एवं लेव वाइगोत्सकी द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक रचनावाद (Cognitive Constructivist) व सामाजिक

रचनावाद (Social Constructivist) के सिद्धांतों का व्यापक रूप से अनुप्रयोग किया गया। रचनावादी उपागम ने शिक्षण व अधिगम के नवीन सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। जिसमें अध्यापक अधिगम प्रक्रिया में सहायता करता है जिसे विद्यार्थी एक उत्तरदायी सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए उत्साहित होते हैं। अध्यापन सूचना, अवधारणायें, तथ्यों, सिद्धांतों, नियमों को उपलब्ध कराता है जो विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और मानसिक योग्यताओं के अनुरूप हों। रचनावादी उपागम पर आधारित अधिगम सिद्धांतों को प्रतिपादित करने में जीन पियाजे,(1896) लेव वाइगोत्स्की, (1896-1934) जॉन डीवी, (1859-1952) आदि का उल्लेखनीय योगदान है।पियाजे के अनुसार-"बुद्धि नयी परिस्थितियों के प्रति मानसिक अनुकूलन की योग्यता है।"(गुप्ता, एस. पी., 2002,)

पियाजे प्रथम मनोवैज्ञानिक थे जिसने व्यक्ति को जन्म से क्रियाशील तथा सूचना संक्रमित प्राणी स्वीकार किया है। संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य बालकों में किसी संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उस पर चिंतन तथा क्रमिक रूप से उसे इस लायक बना देना होता है। जिसका प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में करके वे तरह-तरह की समस्याओं का समाधान आसानी से कर सके।

रचनावाद का इतिहास-

रचनावाद दर्शनशास्त्र का एक विद्यालय है जो अठारहवीं शताब्दी के पूर्व में इटालियन दर्शनशास्त्री जियामवैटिस्टा वाइको (Giambqttista- Vico, 1668-1744) से संबंधित है जहां अनुवांशीकी का अध्ययन किया जाता है। वर्तमान में यह स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे (1896-1980) एवं रसियन मनोवैज्ञानिक लेब वाइगोटस्की (1896-1934) के योगदान से बहुत विस्तृत रूप में शिक्षा दर्शन के रूप में विकसित हो चुका है। तत्व रचनावाद पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत पर आधारित है

इसके अनुसार ज्ञान अधिगमकर्ता द्वारा सक्रिय रहकर सृजन होता है न कि निष्क्रिय रहकर वातावरण द्वारा प्राप्त किया जाता है। लेबवाइगोस्टकी एक प्रसिद्ध ऊर्जा मनोवैज्ञानिक ने संज्ञानात्मक विकास के लिए अपने सिद्धांतों में अपने दो तत्वों को शामिल किया। उसने संज्ञानात्मक विकास पर संस्कृति और भाषा के प्रभाव पर बल दिया। उनके अनुसार संस्कृति के बिना हमारा दिमागी कार्य एक बन्दर के समान प्रारम्भिक मानसिक क्रियाओं तक सीमित है। संस्कृति और

एक स्वस्थ विकसित भाषा के तत्वों के साथ गहन परस्पर क्रिया के साथ, हम उच्च मानसिक क्रियाओं जैसे सोचने, तर्क करने, स्मरण करना आदि इसी प्रकार की क्रियाओं के योग्य बन जाते हैं।

पियाजे का संज्ञानात्मक रचनावाद (Cognitive Constructivist 1896)- पियाजे के संज्ञान से तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से होता है। जिसमें संवेदन (Sensation), प्रत्यक्षण (Perception) प्रतिमा (Imagenery), धारणा (Retention), प्रत्याहान (Recall), समस्या (Problem solving), चिंतन, (Thinking) तर्कणा (Logic) जैसी मानसिक क्रियायें सम्मिलित होती है। संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य बालकों में किसी संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उस पर चिंतन करने तथा क्रमिक रूप से उसे इस लायक बना देना है जिसका प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में करके वे तरह-तरह की समस्याओं का समाधान आसानी से कर सके।इस सिद्धांत में पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की 4 प्रमुख अवस्थाओं में बांटकर की है जो निम्न है-

- संवेदी पेशीय अवस्था-0 से 2 वर्ष
- पूर्व संक्रियात्मक अवस्था-2 से 7 वर्ष
- मूर्त संक्रियात्मक अवस्था-7 से 12 वर्ष
- औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था-12 वर्ष से अधिक

प्रत्येक अवस्था की अपनी कुछ विशेषतायें होती है। जिसके द्वारा यह पहचाना जा सकता है कि बुद्धि के विकास की कौन सी अवस्था चल रही है।

लेव वाइगोस्टकी (Lev Vigotosky) का संज्ञानात्मक या भाषावाद सिद्धांत (1896-1934)- लेव वाइगोटस्की एक रूसी मनोवैज्ञानिक ने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांतों में अपने दो तत्वों को शामिल किया। उसने संज्ञानात्मक विकास पर संस्कृति और भाषा के प्रभाव पर बल दिया। उनके अनुसार संस्कृति के बिना हमारा दिमागी कार्य एक बन्दर के समान प्रारम्भिक मानसिक क्रियाओं तक सीमित है। संस्कृति और एक स्वस्थ विकसित भाषा के तत्वों के साथ गहन परस्पर क्रिया के साथ, हम उच्च मानसिक क्रियाओं जैसे सोचने, तर्क करने, स्मरण करना आदि इसी प्रकार की क्रियाओं के योग्य बन जाते हैं। आगे वाइगोस्टकी वर्णन करते है कि बच्चा भाषायी कार्य के विकास में तीन अवस्थाओं से गुजरता है-

- **सामाजिक (बाहरी) भाषा**- (3 या 4 वर्ष की आयु से पहले) दूसरों को नियंत्रित करने के लिए विस्तृत रूप से उपयोग या सामान्य अवधारणा की अभिव्यक्ति।
- **अध्ययन केन्द्रित भाषा-** (3 से 7 वर्ष की आयु से पहले) इसमें बच्चा अक्सर अपने बारे में बात करता हैऔर ऊंचे स्वर में बोलता हैं। इसमें बच्चा स्वयं अपने को नियंत्रित एवं निर्देशित करने की भूमिका निभाता है।
- **अन्दरूनी मन के अंदर भाषा-** (7 वर्ष से ऊपर की आयु) यह एक बिना बोला हुआ संवाद होता है जो विचारों और व्यवहार को नियंत्रित करता हैं।

वाइगोटस्की विद्यालयों में भाषा संबंधी क्रियाकलाप और कक्षा में अन्दर या बाहर पाठ्यक्रम की परस्पर किया में सांस्कृतिक तत्वों को समेकित करने को मजबूती के साथ तर्क देता है।

पाँच ई अधिगम प्रतिमान, रोजर्स बाईबी, (1997) के द्वारा - रचनावादी उपागम के अंतर्गत अध्यापक द्वारा समस्या समाधान (Problem solving), मस्तिष्क विप्लव (Brainstorming), वाद-विवाद, (Debate) भ्रमण, (Tour) चर्चा, (Discussion) भूमिका निर्वाह (Role play) आदि का प्रयोग कर सामाजिक विषय के शिक्षण को रोचक बनाते हैं। रचनावादी अधिगम में पाँच ई प्रतिमान 'द बायोलाजिकल साइंस करीकुलम स्टडी' को प्रस्तुत करने का श्रेय द्वारा रोजर्सबाईबी, (1997) को जाता है। इस प्रतिमान को रचनावादी अधिगम पाँच चरणों (स्तरों) में विकसित किया जाता है।

पाँच ई अधिगम प्रतिमान के चरण-

- **संलग्नता (Engage)-** इसमें शिक्षक का मुख्य कार्य शिक्षार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करना है।
- **अन्वेषण (Explore)-** इसके अंतर्गत सीखने के लिए सभी निर्देशो का प्रयोग सामूहिक भावना एवं कुछ सामान्य अभिज्ञात विकसित होता है।
- **व्याख्या (Explain)-** इसके अंतर्गत मुख्य रूप से शिक्षक शिक्षार्थी में पारम्परिक विचार विमर्श एवं व्याख्या आदि आते हैं।
- **विस्तारण (Elaborate)-** प्राप्त ज्ञान को अन्य विभिन्न परिस्थितियों के उपयोग में लाना है।
- **मूल्यांकन (Evaluate)-** प्राप्त ज्ञान का उद्देश्य के अनुसार मूल्यांकन।

समस्या का प्रादुर्भाव-

सामान्यतया आज यह अपेक्षा करते हैंकि सभी बच्चें अपनी क्षमता के अनुसार अनुभवों को प्राप्त करके अपनी कक्षा में श्रेष्ठतम हों तो इसके लिए नये अनुभवों को सीखने के लिए विद्यार्थियों द्वारा अधिकतम प्रयास करना चाहिए। एक बार जब आप शिक्षार्थियों की अधिगम जरूरतों को पहचान लेते हैंतब आपका मुख्य कार्य होता है कि एक ऐसे अधिगम तैयार करना जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी को सीखने के लिए तथा अपने अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पूर्ण अवसर मिले। यह वर्तमान प्रयासों जैसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क 2005, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, मानवाधिकार तथा बच्चोंके अधिकारों लैगिंक कर्तव्यों का विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में प्रभावी रूप से संचालित है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क एन. सी. एफ. 2005, भारत में विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत सिलेबस, पाठ्य पुस्तकें तथा अध्ययन विधियांतैयार करने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है। यह दस्तावेज शिक्षा पर इससे पूर्व दी गयी रिर्पाटों लैसे लर्निंग विद आडट वर्डन बिना बोझ के सीखना,राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां 1986 व 1992 तथा फोकस समूह की चर्चाओं आधारित है। शोधार्थिनी के मन में रचनावादी उपागम की सहायता लेते हुए शिक्षक शक्तियो को अपने शिक्षण कार्य को करते हुए छात्रों को केन्द्र में रखते हुए स्व-अधिगम और स्वतंत्र चिन्तन को विकसित करतें हुए उन को सक्रीय अधिगमकर्ता बनायें।

समस्या का औचित्य-

रचनावाद उपागम पाठ्यवस्तु केन्दित रखने के वजाय पाठयचर्या को ऐसे संबंधित किया जाये जिससे बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके। ज्ञान को विद्यालय के बाहर के जीवन के साथ जोड़ना । यह बालक को जीवन से जोड़कर शिक्षा प्रदान करने का उपयोगी सहायक है। इस अध्ययन से सबंधित मैंने जो साहित्य पढा उसमें मुझे माध्यमिक स्तर पर अधिक कार्य मिला उच्च प्राथमिक स्तर पर बहुत कम कार्य हुआ है तो मैने इसमें उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों पर करना सही समझा। विद्यार्थियों के सम्मुख आने वाली अधिगम संबंधी बाधाओं को समझने के लिए क्रमबद्ध शोध की आवश्यकता है। इसलिए इससे बच्चों में स्वत्रंत्र और खुली मानसिकता से बालक के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखकर बौद्धिकता भावात्मक क्रियाकलापों को वस्तुगत रूप से जोड़ना होता है। इस शोध अध्ययन के द्वारा बच्चों मे गहन चिंतन, मनन की आवश्यकता पड़ताल आधारित अध्ययन उपागम का प्रयोग अध्यापक अपने शिक्षण में करता है ताकि

बालक विमर्शी चिंतन, भावनायें या व्यवहार को पहचान सके कि किस भाति से धारणाएँ या भावनाएँ व्यवहार को प्रभावित करता है। इस कार्यक्रम की विषय वस्तु को पुनःसंरचित किया जाये ताकि विद्यालयी शिक्षा की बदलती हुई आवश्यताओं के लिए इसका औचित्य सुनिश्चित हो सके।

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक विज्ञान विषय का प्रयोग इसलिए किया गया कि इसका दायित्व स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता के आदर, जैसे मानवीय मूल्यों का सुदृढ़ आधार तैयार हो सके। रचनावादी उपागम का प्रयोग सामान्य रूप से प्रत्येक विषय के शिक्षण में किया जाता है तथापि सामाजिक विषय के शिक्षण के क्षेत्र में इसका प्रयोग बहुत कम किया जाता है। प्राकृतिक विज्ञानों की अपेक्षा सामाजिक विषयों इतिहास, नागरिकशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र इत्यादि की प्रकृति सैद्धांतिक होती है जिसके कारण इनके अध्ययन में विद्यार्थियों की रूचि तुलनात्मक रूप से कम होती है। परन्तु रचनावादी उपागम पर आधारित शिक्षण प्रदान करने से इन विषयों के अध्ययन एवं अध्यापन को भी जीवंत व रूचिकर बनाकर उच्च स्तरीय अधिगम को प्रोत्साहित किया जा सकता है। (यादव वंदना, 2018)

रचनावाद वह सिद्धान्त है जो इस बात पर बल देता है कि छात्र केवल निष्क्रिय रूप से जानकारी लेने के बजाय ज्ञान का निर्माण अपने अनुभवों से स्वयं गतिविधि के माध्यम से करें। सीखना स्वाभाविक रूप से एक सामाजिक क्रिया है एन.सी.एफ. 2005 में करके सीखने पर बल दिया है सामाजिक विज्ञान विषय छात्रों को सांस्कृतिक जीवन से जोड़कर गतिविधि आधारित सीखने में सहायक होता है इसलिए सामाजिक विज्ञान विषय को लेने का विचार आया कि छात्र व्यवहारिक जीवन से स्वंय सीखने के लिए रचनात्मक तरीकों की पहचान करके अपने व्यावहारिक अनुप्रयोग से अधिगम संबंधी समस्याओं को सुलझाने में सहायक हो।

शिक्षा विभिन्न विधाओं पर आधारित ज्ञान है। यह मात्र कुछ अभ्यांतर विशेष विधाओं का अनुप्रयोग नहीं है, अपितु एक आचरण या अभ्यास है, एक प्रयास या परिस्थिति है जहां सिद्धांत और प्रायोगिक विवेक निरंतर जन्म लेते रहते हैं। यह वर्तमान प्रयासों जैसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क 2005, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, मानवाधिकार तथा बच्चों के अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों का विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में प्रभावी रूप से संचालित है। रचनावाद उपागम पाठ्यवस्तु क्रेन्द्रित रखने के बजाय पाठ्यचर्या को ऐसे संबंधित किया जाये जिससे बच्चों का समग्र

विकास सुनिश्चित हो सके। ज्ञान को विद्यालय के बाहर के जीवन के साथ जोड़ना। कोठारी आयोग, (1964-66)- अनुसार, "भारत के भाग्य का निर्माण हमारी कक्षाओं में हो रहा है।"जो समाज के सुविधा वंचित वर्गों के बच्चों के ज्ञान और कौशलों का उपयोग करना ताकि समाज के सुविधा सम्पन्न वर्गों के साथियों में उनका सम्मान बढ़े।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क एन.सी.एफ., (2005), भारत में विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत, सिलेबस, पाठ्यपुस्तकें तथा अध्यापन विधियां तैयार करने के लिए एक ढाँचा प्रदान करता है। यह दस्तावेज शिक्षा पर इससे पूर्व दी गयी रिपोर्टों जैसे लर्निंग विद आउट वर्डन (बिना बोझ के सीखना), राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां 1986 व 1992 तथा फोकस समूह की चर्चाओं पर आधारित है। प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शिक्षा को प्रारंभिक शिक्षा कहा जाता है। प्रारंभिक शिक्षा हमारी शिक्षा प्रणाली के पिरामिड (सूची स्तंभ) का आधार होती है जिस पर दसवीं पंचवर्षीय योजना में सर्व शिक्षा अभियान के द्वारा विशेष बल दिया गया। बच्चों के समग्र शिक्षा के लिए तथा बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए विद्यालय प्रायः खेलकूद, योग, सांस्कृतिक कार्यक्रम परियोजना कार्य, क्रिया-आधारित अधिगम, जीवन कौशलों के लिए प्रभाव जैसे कार्यक्रम संचालित करते हैं। रचनावादी अनुदेशनात्मक सामग्री (Constructivist Instructional Material) का उपयोग अन्य साधन और वास्तविक जीवन के सामग्रियों का इस्तेमाल योग्यता अर्जन करने के लिए करना चाहिये। उपलब्धि का मूल्यांकन के लिए उपयोग किये जाने वाले मापदंडों का निर्धारण करना चाहिये इसके अतिरिक्त उन स्थितियों का निर्धारण करें जिसके अंतर्गत उपलब्धि का मूल्यांकन किया जायेगा। रचनावाद उपागम वास्तविक सांसारिक समस्या सुलझाने व वास्तविक युक्तियों पर ध्यान केन्द्रित करना। समस्या का सम्पूर्ण मानसिक स्वरूप बनाकर उस समस्या का मानसिक रूप से समाधान करने का प्रयास करता है। विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने की अनुमति देना और उन्हें बुद्धिमता पूर्ण प्रश्न उठाने के लिए प्रोत्साहित करना। अपने अधिगम की वृद्धि का स्वयं विश्लेषण व स्वयं जांच करना। प्रस्तुत शोध अध्ययन की कुछ मनोवैज्ञानिकों ने संबंधित साहित्य के द्वारा प्रस्तुत किये जाने का प्रयास किया गया है।

वर्तमान शोध से सम्बन्धित पूर्व में हुए अनुसंधान-वर्तमान शोध से सम्बन्धित पूर्व में हुए अनुसंधान इस प्रकार है- हुबर्ट, ओ.क्यू. सेम्पसन, ई.एस. और इसुमान, जे.के. (2006) ने''स्टडी हैबिट्स अमंग सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट्स इन

सम सलेक्टेड डिस्ट्रिक्स इन सेन्ट्रल रीजन, थाना''नामक शोध किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि-सामान्य विद्यालयों और डे-बोर्डिंग विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

इरगिन तथा केनल (2007), में ''टू इक्जामिन द इफेक्ट्स ऑफ फाइव ई इन्स्ट्रक्शन मॉडल ऑन द स्टूडेन्ट्स एकेडमिक सक्सेस इन फिजिक्स एजुकेशन'' नामक अनुसन्धान कार्य सम्पादित किया। इस अनुसन्धान कार्य द्वारा नामित प्रक्षेप्य गति विषय पर पांच ई प्रतिमान के आधार पर निर्मित अध्याय का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता और मनोवृत्ति के स्तरों पर देखा गया। यह शोध कार्य 84 विद्यार्थियों पर संचालित किया गया। इन्होने शोध निष्कर्ष में पाया कि बोर्डिंग विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें डे बोर्डिंग विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक उत्तम है।

मैरील (2008), ने "द इम्पैक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टिविस्ट टीचिंग स्टैटेजी ऑन द एक्सवीजिसन ऑफ हायर आर्डर कागनिशन एण्ड लर्निंग" नामक शोध कार्य सम्पन्न किया। अर्ध-प्रायोगिक डिजाइन पर आधरित इस प्रायोगिक अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य उच्च स्तरीय ज्ञान को ग्रहण करने के संदर्भ में ब्रेन बेस्ड शिक्षण रणनीति और परम्परागत लेक्चर विधि की प्रभावशीलता ज्ञात करना।

कीरातीचेमरोनड्ब्लू. (2010), "डेवलपिंग ए सांइस लर्निंग यूनिट टू इन्हैस सैकेण्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स अन्डरस्टैडिंग ऑफ ए केमिकल शीएम्शन बेस्ट ऑन द कन्स्ट्रक्टिविस्ट ऑफ एप्रोच",नामक शोध किया गया इसमें आई बी टी बी ए गतिविधि में मुख्य से चार गतिविधियां को सन्निहित किया गया इसमें 260 विद्याथियों को लिया जो दो समूहों में प्रायोगिक समूह में छात्र 130 तथा परम्परागत समूह छात्र 130 को न्यादर्श के रूप में चुना गया। जिसमें शोधपरिणाम में पाया गया की आई बी टी बी ए कारण विद्यार्थियों की ज्वलनशील रासायनिक अनुक्रिया की समक्ष सार्थक वृद्धि हुई।

अकिस्ली, यालकिन तथा तुरगुत (2011) के द्वारा "इफेक्ट्स ऑफ द फाईव ई लर्निंग माडल ऑन स्टूडेन्ट्स एकेडमिक अचीवमेन्ट्स इन मूवमेन्ट एण्ड फोर्स इश्यूज" नामक शोध अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य

विद्यार्थियों की उपलब्धि के सन्दर्भ में फाईव ई लर्निंग प्रतिमान पर आधारित सामग्री की प्रभावकारिता का आंकलन करना था। शोधकर्ता द्वारा 'गति तथा बल' इकाई के उददेश्य को आधार बनाकर सामग्री का निर्माण किया गया।

रोटगनस एवं हन्क (2011) ने "शैक्षिक उपलब्धि के लिए स्थिति और सक्रिय सीखने पर अध्ययन" उन्होंने 69 बहुशिल्प विद्यार्थियों पर अपना अध्ययन किया। उन्होंने एक दिन के दौरान पांच उपागम से सीखने और स्थिति पर अध्ययन किया। जिसमें इन्होंने पाया कि शैक्षिक उपलब्धि तीव्र गति से प्राप्त हुई बाद में कुछ कम और दिन के अन्त में फिर वृद्धि हुई।

कनुप्रिया एवं कुलश्रेष्ठ, ए.के. (2011), "इफेक्ट ऑफ कंस्टक्टिविस्ट प्राब्लम-बेस्ट लर्निंग एप्रोच ऑन द एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ ग्रेड 7 सोशल साइन्स पीपुल्स "पर अध्ययन किया जो सामाजिक विज्ञान विषय के तरफ उन्मुख थे और इन्होंने पाया कि समस्या आधारित अधिगम पर रचनात्मक दृष्टिकोण के शिक्षण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर बेहतर प्रभाव पाया।

गौतम, ए.एवं कुलश्रेष्ठ, ए. के. (2011), "डेवलपमेंड ऑफ कंस्ट्रक्टविस्म एप्रोच वेस्ड इन्स्ट्रक्शन मटेरियल फॉर बायोलाजी स्टूडेन्ट्स" पर अध्ययन किया जिसमें 40 छात्राध्यापिकों एव 60 छात्रों पर किया जिसमें उन्होंने पाया कि बच्चो में रचनावादी उपागम आधारित शिक्षण सामग्री का उपलब्धि व अभिवृत्ति पर इस उपागम का सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

जोसेफ (2012), ने "कमपैरेटिव स्टडी ऑफ द इफेक्टिवनेस ऑफ कम्प्यूटर असिस्टेड इन्स्ट्रक्शन, कन्स्ट्रक्टिस्ट-कम्प्यूटर असिस्टेड इन्स्ट्रक्शन इन लर्निंग मालीक्यूलर जेनेटिक्स एट द हायर सेकेण्ड्री स्कूल लेवल" नामक अनुसन्धान किया। जिस पर कन्स्ट्रक्टिस्ट-कम्प्यूटर असिस्टेड इन्स्ट्रक्शन इन लर्निंग का सार्थक प्रभाव पाया। त्यागी, (2012) द्वारा "प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, सृजनात्मक चिंतन तथा शैक्षणिक अभिप्रेरणा पर रचनावादी शिक्षण का प्रभाव" जानने के उद्देश्य से एक शोध कार्य किया गया। जिसमे पाया कि रचनावादी शिक्षण का प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, सृजनात्मक चिंतन तथा शैक्षणिक अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

ओलाटोमो, आर.ए. (2013) ने "स्टडी हैबिट, सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड साइंस अचीवमेंट ऑफ पब्लिक एण्ड प्राइवेट जूनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट्स इन ओवी स्टेट, नाइजीनियर"नामक शोध किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि पब्लिक और प्राइवेट जूनियर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अली अरशद, अली जुल्फीकर और नाज शमीम. (2015), **"**स्टडी हैब्टिस एण्ड एडूकेशन लर्निंग ए केस स्टडी ऑफ इम्पेरिजन ऑफ प्राइवेट एण्ड पब्लिक सेक्टर स्कूल" नामक शोध किया और निष्कर्ष रूप से पाया कि निजी विद्यालय के विद्यार्थी सम्पूर्ण वर्ष तक जबकि पब्लिक विद्यालय के विद्यार्थी सिर्फ परीक्षा के समय अध्ययन करते है व निजी विद्यालय के विद्यार्थी घर पर अध्ययन का अधिक समय देते है।

मैकराइट, (2017) "ए कम्परंटिव स्टडी केमेस्ट्री टीचिग द फाईव ई लार्निंग साइकल एण्ड टेडिशनल टीचिंग विद द चार्ज इंग्लिश लैग्वेज पापुलेशन इन ए मिडिल स्कूल सेटिंग" नामक शोध कार्य किया गया जिसमें कक्षा 8 के विद्यार्थी सम्मलित थे जो दो समूह पर प्रसारित किया गया जिसमें पाच ई प्रतिमानों का प्रयोग प्राथमिक स्तर के हर विषय के विकास में विद्यार्थियों की अभिरूचि बढ़ाने के लिए सफल रहा है।

वर्मा, रति एवं कुलश्रेष्ठ ए.के. (2017) "इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टविस्ट एप्रोच ऑफ एकेडमिक एचीवमेण्ट लैव कम्पटेन्स एण्ड एटीटयूट ऑफ स्टूडेण्टस टूवार्डस कैमिस्ट्री एट सीनियर सेकेण्ड्री" स्तर पर अध्ययन किया जो जिला आगरा के यूपी वोर्ड के माध्यमिक स्तर के 60 रसायन विज्ञान के छात्रों पर किया गया जिसमें पाया गया कि रचनावादी दृष्टिकोण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि व रसायन विज्ञान की प्रायोगिक क्षमता के प्रति छात्रों का सार्थक प्रभाव परिलक्षित पाया गया।

पटेल, रंजन, सिंह शिरीष, (2019) में "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संस्कृत विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर निर्माणवादी उपागम की प्रभावशीलता का अध्ययन" किया जो बच्चों कि संस्कृत विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर निर्माणवादी उपागम का सकारात्मक प्रभाव पडा।

मैक्रो स्टोजनौविक एक्सल ग्राउण्ड एवं स्टीफन फ्राइज (2020)- "एप वेस्ड स्टर्डिंग हेविट विंल्डिंग रिड्यूसिस इम्पेयरमेण्ट्स ड्यूरिंग" में स्टर्डिंग एवं हेण्ड सैम्पलिंग स्टडीज की 91 विश्व विद्यालय के छात्रों के एक नमूने ने

व्यक्तिगत अध्ययन की आदतों को परिभाषित किया और छह सप्ताह में प्रेरक संघर्ष, प्रेरक हस्तक्षेप और व्यवहार की स्वचालिता पर प्रत्येक आदत के दोहराव के बाद अपने फोन पर एक ऐप का उपयोग करके डेटा लॉग किया इसमें कुल संख्या= 2574 आदत दोहराव उत्पन्न किए गए हैं और बहुस्तरीय मॉडलिंग का उपयोग करके उनका विश्लेषण किया गया है परिणाम बताते है कि ऐप आधारित जानबूझकर आदत निर्माण कार्य, व्यवहार की स्वचालिता के रूप में आदत पुनरावृत्ति द्वारा भविष्यवाणी की जा सकती है।

रासा एम. एव डेलरहमन (2020), "मेटाकॉगनेटिव अवेयरनेस एण्ड एकेडमिक मोटीवेशन एण्ड देयर इम्पैक्ट ऑन अकैडमिक एचीवमेण्ट ऑफ अजमान यूनीवर्सिटी स्टूडेण्ट्स" में अपने अध्ययन में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मेटाकॉग्निटिव जागरुकता और शैक्षणिक प्रेरणा के संबंध और प्रभाव की व्याख्या की जिसमें समाजशास्त्र का अध्ययन करने वाले 200 छात्रों को शामिल किया जिसमें पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि में महिला और पुरुषों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। हालांकि, मेटाकॉगनेटिव जागरुकता में एक महत्वपूर्ण अंतर है। महिला छात्रों ने उच्च स्तर के मैटाकॉग्निटिव ज्ञान और मेटाकॉग्निटिव विनिमय दिखाया ।

अंगकारिणी, टी. (2021) स्टडी हैविट्स ऑफ अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स ड्यूरिंग पेनडेमिक ऑफ कोविड-19 जर्नल ऑफ लर्निंग एण्ड इन्स्ट्रक्शनल स्टडीज नामक अनुसंधान कार्य किया जिसमें कोविड-19 महामारी के अनुसार छात्रों की अध्ययन आदतों को निर्धारित करने के लिए किया गया जिसमें शैक्षणिक वर्ष 20-09-2020 में अंग्रेजी शिक्षा, विभाग, यूनीवर्सिटी पी.जी.आर.आई के 73 स्नातक छात्र अध्ययन में शामिल थे जिसमें 30 आइटम की प्रश्नावली का उपयोग कर पाया गया कि महिला छात्रों में पुरुष छात्रों की तुलना में बेहतर सीखने की आदतें थी।

शिवनरायण (2021) "माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, सांवेगिक बुद्धि, आत्मप्रत्यय एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" में इटावा जिले में अध्ययनरत् माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त शासकीय अशासकीय सहायता प्राप्त एवं आशासकीय गैर

सहायता प्राप्त विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के 200 उच्च उपलब्धि वाले व 200 निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि, जनसंख्या प्रतिदर्श का न्यादर्श विधि के रूप में विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से एवं विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि से चयन किया। निष्कर्ष रूप में पाया गया उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के माध्य फलांक निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मक के माध्यम फलांकों की अपेक्षा अधिक पाये गये।

मीनाक्षी (2022)- "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययन" में शोधकर्त्री द्वारा जयपुर शहर के राजस्थान बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजूकेशन से संबंधित माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों को चयनित किया गया जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

एनठाले भोसेव सोपन (2022) द्वारा "इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टविस्ट एप्रोच इन्हैसिंग एकेडमिक एचीवमेन्टीन हिस्ट्री अमंग 7 स्टेण्डर्ड स्टूडेन्ट्स" नामक शोध कार्य में कक्षा 7 के बच्चों की इतिहास विषय में रचनावादी दृष्टिकोण से शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने पर किया गया, जिसमें प्रीटेस्ट लगाया गया व उनके शैक्षिक परिणाम को जानकर पुनः रचनावादी उपागम द्वारा शिक्षण कार्य करने के प्रश्चात पोस्ट टेस्ट लगाना जिसमें पाया गया कि प्री टेस्ट की तुलना में पोस्ट परीक्षणों का स्कोर नियंत्रण समूह से प्रयोगात्मक समूह का बेहतर रहा।

उपरोक्त अध्ययनों से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि रचनावादी उपागमों से संबंधित अध्ययनों में उपलब्धि व अध्ययन आदतों के प्रति छात्रों को आनंदमयी वातावरण में शिक्षण प्रदान करने पर बल देता है। इन अध्ययनों में अभिरूचि, मनोवृत्ति, सृजनात्मक चिन्ता, उपलब्धि अभिप्रेरणा आदि चरों पर कार्य पाया गया, इन शोधों में शोधार्थियों को अध्ययन आदतों से संबंधित अध्ययन कम प्राप्त हुए, इसलिये शैक्षिक उपलब्धि के साथ अध्ययन आदत पर रचनावादी शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना सार्थक समझा।

अनुसंधान प्रश्न -

1 क्या उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का प्रभाव पड़ेगा?

2 क्या उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का प्रभाव पड़ेगा?

शोध समस्या अभिकथन -

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अध्ययन आदतों पर रचनावादी उपागम आधारित शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण-

उच्च प्राथमिक स्तर-

सैद्धांतिक परिभाषा- राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कक्षा 6 से 8 तक विद्यालय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय माने जाते है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार - नई शिक्षा नीति 2020 की शैक्षणिक संरचना 5+3+3+4 के अनुरूप की गई है। मिडिल स्टेज में कक्षा 6 से 8 तक की पढ़ाई होगी जिसमें 11 से 14 वर्ष तक की उम्र के बच्चों को शामिल किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 7 के विद्यार्थियों को चयनित किया जायेगा।

कार्यात्मक परिभाषा- इस अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर का अभिप्राय राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त परिषदीय विद्यालय से है जिसमे कक्षा 6 से 8 की कक्षा संचालित होती है।

अध्ययन आदत-

सैद्धांतिक परिभाषा- गुड. सी.पी. (1973), ने ''डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन'' के अंतर्गत अध्ययन आदत को निम्न रूप से परिभाषित किया है-अध्ययन आदत पठन व्यवहारों के प्रतिरूप है जो आदतन बन जाते हैं तथा बिना किसी हिचकिचाहट के निष्पादित होते है।''

कार्यात्मक परिभाषा- अध्ययन आदत से आशय है कि छात्र स्थायी आचरण को धारण कर किस हद तक अपनी

अध्ययन आदतों का विकास कर शैक्षणिक सफ़लता प्राप्त करता है।

रचनावादी उपागम-

सैद्धांतिक परिभाषा- रचनावादी उपागम का अभिप्राय 5 ई प्रतिमान से हैं जिसमें संलग्नता, अन्वेषण, व्याख्या, विस्तारण, मूल्यांकन, अवयव सम्मिलित होते है।

कार्यात्मक परिभाषा- प्रस्तुत अध्ययन में इसका अभिप्राय सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु के लिए पर रचनावादी उपागम आधारित उपरोक्त वर्णित 5 ई प्रतिमान पर आधारित विषयवस्तु निर्माण व उस पर आधारित शिक्षण है। इसमें सामाजिक विज्ञान का अभिप्राय प्रस्तुत अध्ययन के सामाजिक विषय से है।

शैक्षिक उपलब्धि-

शिक्षा शब्दकोष, कार्टर के अनुसार (1959),"विद्यालयविषयों में ज्ञान प्राप्ति या कौशलों का विकास करना, जो परीक्षण प्राप्तांक, या मूल्यांकित प्राप्तांक, अध्यापक द्वारा दिए जाए या दोनों के द्वारा की गई गतिविधियां शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है।"

डूमन (2010) ने भी शैक्षिक उपलब्धि को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "शैक्षिक उपलब्धि वह प्रक्रिया है जिसमें औपचारिक शिक्षा में प्राप्त ज्ञान का एक माप आमतौर पर परीक्षण, स्कोर, ग्रेड, प्राप्तांक और डिग्री द्वारा इंगित किया जाता है यहां विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर को अंकों के आधार पर आंका जाता है"।

कार्यात्मक परिभाषा- प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य चयनित विषयबस्तु के आधार पर स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण का निर्माण करके दोनों समूहों पर पूर्व परीक्षण का प्रशासन किया जायेगा तत्पश्चात प्रयोगात्मक समूह को रचनावादी उपागम आधारित पाठ्योजनाओं एवं नियंत्रित समूह को शोधार्थिनी द्वारा 30 दिन का शिक्षण कार्य किया जायेगा अंत में दोनों समूहों पर पश्च उपलब्धि परीक्षण द्वारा छात्रों की उपलब्धि का एक बार पुनः आंकलन किया जायेगा। इस प्रकार पूर्व एवं पश्च परीक्षणों द्वारा प्राप्त छात्रों के प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा।

शिक्षण –सैद्धांतिक परिभाषा- कुलश्रेष्ठ,एस. पी.,(1995) के शब्दों में कहा जा सकता है कि "शिक्षण प्रक्रियाओं की एक

ऐसी व्यवस्था है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को ज्ञान प्रदान करने के लिए अनेक प्रकार की क्रियाओं को करता है। जिससे छात्रों के व्यवहार में आत्मीयता के साथ वांछित परिर्वतन लाने का प्रयास करता है।

क्लार्क (2004)के अनुसार,"शिक्षण वह प्रक्रिया है जो शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए नियोजित तथा संचालित की जाती है।"

कार्यात्मक परिभाषा- शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें छात्रों को सीखने के दिशा निर्देश देने तथा उनकी शक्तियों के विकास में सहायता करना है। अध्ययन के प्रारूप के अनुसार शोधार्थिनी द्वारा रचनावादी उपागम आधारित अनुदेशनात्मक सामग्री (पाठयोजना) का निर्माण किया जायेगा तत्पश्चात चयनित न्यादर्श पर शोधार्थिनी द्वारा शिक्षण कार्य किया जायेगा।

अनुदेशनात्मक सामग्री-

सैद्धांतिक परिभाषा-

कड़जेरा (2006) के अनुसार- कक्षा में नयी अवधारणाओं को समझाने में अनुदेशनात्मक सामग्री शिक्षक को मदद प्रदान करती है व छात्रों को भी उन अवधारणाओं को समझने में बेहतर सहायता प्रदान करती है हालांकि अनुदेशन सामग्री स्वयं में कोई साध्य नहीं है लेकिन ये साध्य का साधन अवश्य रूप से है"|

कार्यात्मक परिभाषा-

अनुदेशनात्मक सामग्री से तात्पर्य शिक्षण तथा प्रशिक्षण में कौशलो और प्रविधियों के प्रयोग से होता है जिसमे चार्ट, मॉडल, दृश्य-श्रव्य सामग्री, परिचर्चा, व्याख्यान, विधि, शिक्षण आव्यूह व विभिन्न प्रकार के कौशल आदि के प्रयोग से होता है |प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी का अनुदेशनात्मक सामग्री से तात्पर्य चयनित बिषयवस्तु के अनुसार रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विषय में निर्मित पाठ्योजनाओं से है |

अध्ययन के उद्देश्य -

1 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विज्ञान की अनुदेशनात्मक सामग्री का निर्माण करना।

2 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विज्ञान शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।

3 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर रचनावादी उपागम पर आधारित सामाजिक विज्ञान शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना-

1 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

2 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

परिसीमांकन- प्रस्तुत शोध अध्ययन का निम्न प्रकार से परिसीमांकन किया गया है, जो इस प्रकार है-

1 प्रस्तुत शोध अध्ययन को आगरा शहर (उ.प्र.) के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय तक ही सीमित रखा जाएगा।

2 प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 7 के विद्यार्थियों को ही जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया जायेगा।

3 प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 7 के सामाजिक विज्ञान को ही शिक्षण विषय के रूप में चुना गया हैं।

अध्ययन के चर-स्वतंत्र चर- रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक विज्ञान शिक्षण

आश्रित चर- शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदत

नियंत्रित चर- प्रयोग के समय ऐसे, असम्बद्धचर उपस्थित हो सकते है जो प्रयोग के परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। जैसे – आयु, लिग, वातावरण, शोर आदि। ऐसे ही सम्भावित, असम्बद्ध चर तथा उनको नियंत्रण की विधियों का वर्णन अधोलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट है

तालिका सं 01. असम्बद्ध चर तथा उनके नियंत्रण की विधि

नियंत्रित चर	नियंत्रण चर की विधियाँ
आयु	स्थिरता- यादृच्छिक
लिंग	स्थिरता- यादृच्छिक
कक्षा	स्थिरता
अध्ययन समय	स्थिरता
शोर	निष्कासन

संस्थागत विभिन्नता	चयन

शोध अध्ययन विधि-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अर्द्ध प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। इस अध्ययन में प्रतिदर्श को सोउद्देश्य विधि के द्वारा चयनित किया जाएगा।

मैकगुइयन (1990) के अनुसार – प्रायोगिक कल्प डिजाइन एक ऐसा डिजाइन होता है जो एक प्रयोग के सदृश होता है परन्तु सहभागी लोग निरुपणों मेंयादृच्छिक ढंग से आवंटित नहीं किये जाते हैंऔर न ही निरूपण समूहों के लिए यादृच्छिक रूप से निर्धारित होता है परिणामतः वे हमेशा मिश्रित दीखते हैं |

जनसंख्या-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आगरा शहर के दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट द्वारा संचालित (प्रेम विद्यालय) उच्च प्राथमिक स्तर कक्षा VII के समस्त छात्राओं को वर्तमान अध्ययन की जनसंख्या के रूप में सम्मलित किया जायेगा |

न्यादर्श का आकार एवं न्यादर्श चयन प्रकिया –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राज्य के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य का, शहर के रूप में आगरा शहर का, इसके अतिरिक्त विद्यालय का चयन भी सोउद्देश्य विधि द्वारा ही किया जायेगा। कक्षा का चयन यादृच्छिक विधिऔर अन्तिम रूप से प्रतिदर्श का चयन इन्टैक्ट विधि द्वारा किया जायेगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा चयनित 70 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में इन्टैक्ट विधि के द्वारा चयनित किया जाएगा। जिसको दो भागो में बॉटा जायेगा। जिसमें एक प्रयोगात्मक समूह तथा दूसरा नियंत्रित समूह होगा। प्रत्येक समूह में 35 विद्यार्थी होगे। न्यादर्श चयन प्रक्रिया को निम्नलिखित चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

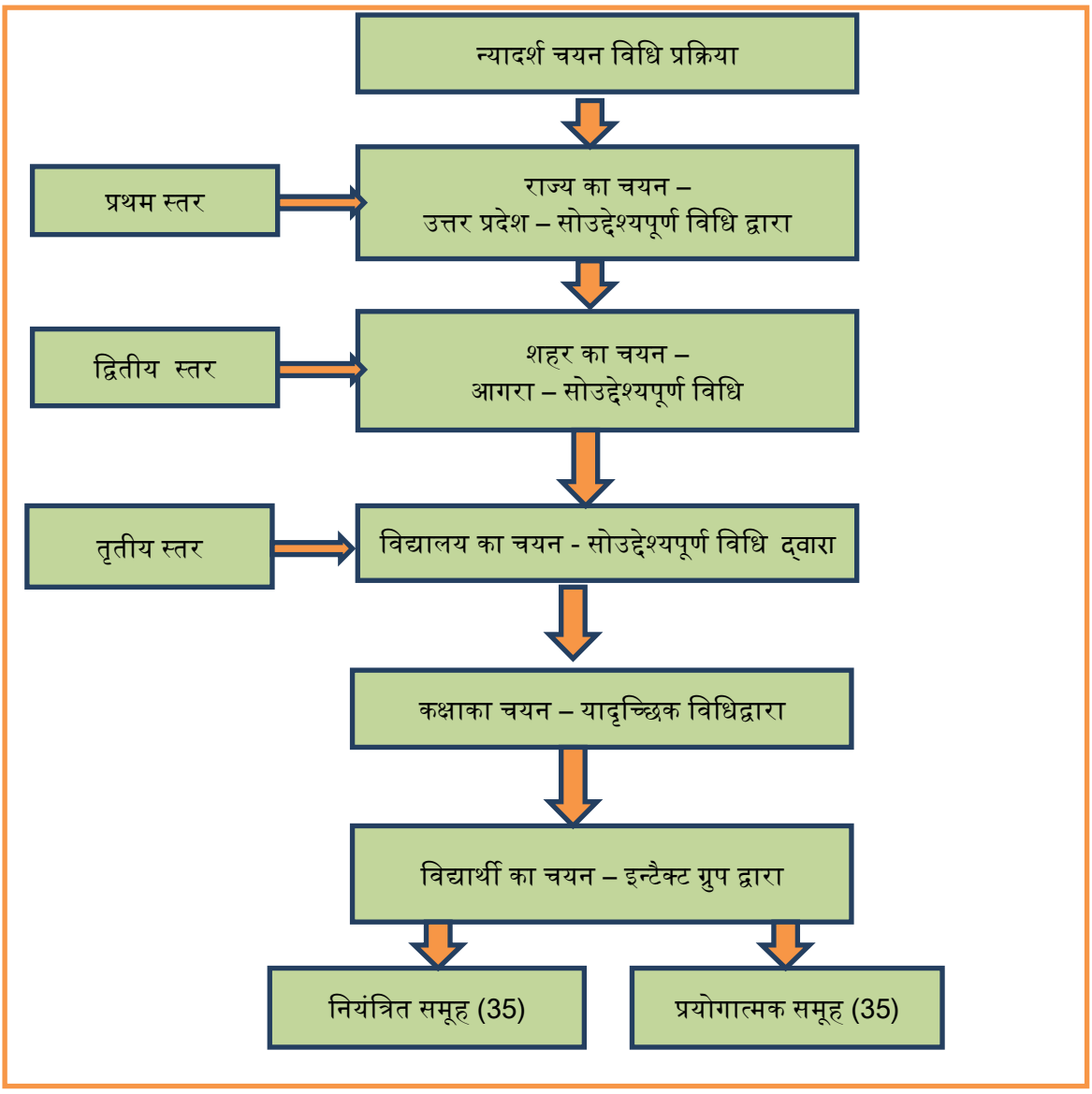

चित्र संख्या 1. न्यादर्श चयन की प्रकिया

अध्ययन की प्रक्रिया-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक समूह व नियंत्रित समूह के छात्रों का पूर्व परीक्षण किया जायेगा तत्पश्चात शोधार्थिनी द्वारा रचनावादी उपागम आधारित आधारित कक्षा VII की सामाजिक विषय की पाठ्यवस्तु के विश्लेषणका विषयवस्तु विश्लेषण किया जायेगा तथा चयनित प्रकरणो के आधार पर शोधार्थिनी द्वारा रचनावादी उपागम व परंपरागत विधि आधारित पाठयोजनाओ का निर्माण किया जायेगा व 30 दिन तक शिक्षण कार्य किया जायेगा। तदुपरान्त पश्च परीक्षण द्वारा विद्यार्थियों के प्रदत्तों के आधार पर शिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन किया जायेगा और निष्कर्ष प्राप्त किए जायेगें। सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया निम्न प्रकार प्रदर्शित की गयी है-

शोध अध्ययन प्रारूप-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दो-समूह यादृच्छिक पूर्व-पश्च परीक्षण शोध प्रारूप अपनाया जाएगा।

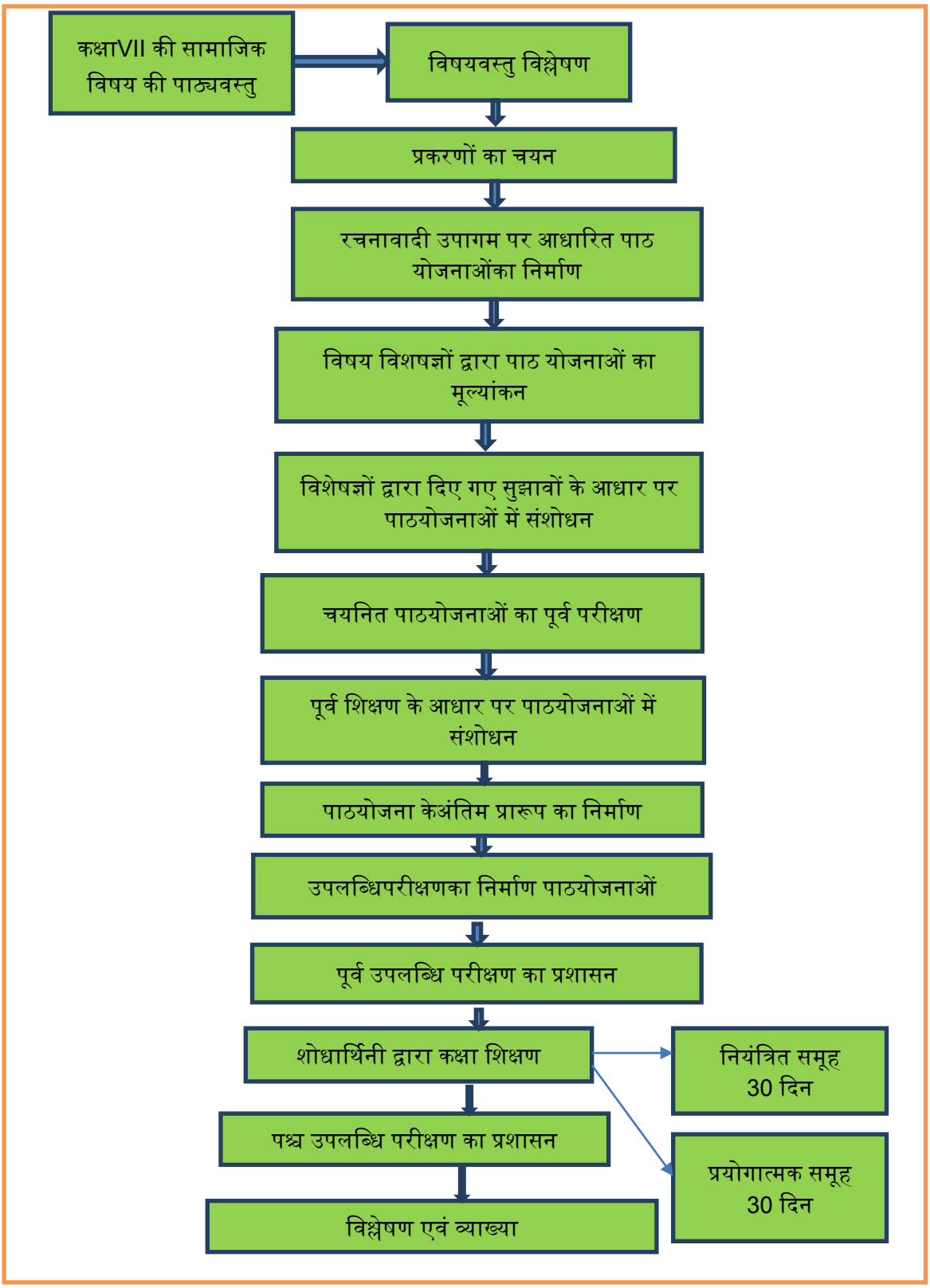

चित्र संख्या 2. अध्ययन की प्रक्रिया

तालिका सं.- 2.0 अध्ययन का प्रारूप

समूह	पूर्व परीक्षण	न्यादर्श	उपचार	चक्रावधि	सम्पूर्ण अवधि	पश्च परीक्षण
प्रयोगात्मक समूह	1.शैक्षिकउपलब्धि 2.अध्ययन आदतें	35 विद्यार्थी की संख्या	रचनावादी उपागम आधारित सामाजिक वि0 शिक्षण की 20 पाठ योजना	40 मिनट प्रातिदिन	कुल प्रयोग अवधि 30 दिन	1.शैक्षिकउपलब्धि 2.अध्ययन आदतें
नियंत्रित समूह	1.शैक्षिकउपलब्धि 2.अध्ययन आदतें	35 विद्यार्थी की संख्या	परम्परागत विधि आधारित सा. विज्ञान शिक्षण की 20पाठ योजना	40 मिनट प्रातिदिन	कुल प्रयोग अवधि 30 दिन	1.शैक्षिकउपलब्धि 2.अध्ययन आदतें

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण-

शैक्षिक उपलब्धि - प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि को मापने हेतु स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन आदत - प्रस्तुत शोध में अध्ययन आदत मापने हेतु लक्ष्मी विजय और नारायण (2014) द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा। जिसकी विश्वसनीयता, गुणांक .86 है तथा .72 वैधता है। इसमें आइटम संख्या 38 हैं । जो 12 से 24 आयु के बच्चों पर उपयोग किया जायेगा।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियॉं - प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु मध्यमान, मानक विचलन और एनकोवा का प्रयोग किया जायेगा। इसके अलावा शोध की आवश्यकतानुसार अन्य सांख्यिकीविधियाँ भी प्रयुक्त की जा सकती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की उपादेयता-

प्रस्तुत अध्ययन की उपादेयता उच्च प्राथमिक स्तर पर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धिएवं अध्ययन आदतों पर रचनावादी उपागम पर अनुदेशनात्मक सामग्री को विकसित करने का प्रयत्न किया गया है। जो विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक स्तर को समझने के लिए एक शिक्षक के रूप में आपकी सहायता के हिसाब से महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। रचनावादी कक्षाकक्ष में विद्यार्थी प्रस्तुत अवधारणाओं एवं विचारों को वास्तविक जगत से जोड़ने का प्रयास करेंगे जिससे अनुसंधान जन सामान्य में शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने में सहायक होगा। रचनावाद उपागम इस सिद्धान्त पर आधारित है जिसमें बच्चे अधिक सीखते हैं और अधिगम में ज्यादा आनंद लेते है क्योंकि वे शिक्षण अधिगम

प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सम्मिलित रहते हैं ।इस विधि के द्वारा छात्र व्यवहारिक गतिविधियों द्वारा विद्यार्थी वातावरण के साथ अर्न्तक्रिया करने के लिए उत्साही रहते हैं।इसमें विद्यार्थियों द्वारा दी गयी राय एवं विचारों को स्वीकार किया जाता है जो उनके स्वयं के अनुभवों को बल प्रदान करेगा। इस विधि में अधिगम कार्य बच्चों के अपने तरीकों से पूर्ण किये जाते हैं जो सहयोगी अधिगम को बढ़ावा देने में सहायक होगा।इस उपागम से विद्यार्थियों के प्रदर्शन का अवलोकन किया जायेगा जिसका प्रदर्शन अच्छा होगा उसकी प्रशंसा कर उसे अभिप्रेरित करने में मदद करेगा।

रचनावादी कक्षाकक्ष में विद्यार्थी पुराने अनुभवों को नई परिस्थितियों से सम्बन्धित करेगा।रचनावाद उपागम समूह चर्चायें (Group Discussion), गतिविधि (Activity), वाद-विवाद (Debate), बौद्धिक सहभागिता (Intellectual Participation) एंव निष्कर्ष (Conclusion) निकालने इत्यादि पर आधारित होती है जो विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल का सृजन करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अस्थाना,वी.एवं श्रीवास्तव, वी. (2011), *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यकीय.*आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- आर.एम.एवडेबलहमन (2020), मेटाकॉगनेटिव अवेयरनेस एण्ड एकेडमिक मोटीवेशन एण्ड देअर इम्पैक्ट ऑन अकेडमिक एचीबमेण्ट ऑफ अजमान यूनीवर्सिटी स्टूडेन्ट्स: इजिप्ट अजमान यूनीवर्सिटी, हीलियोन बाल्यूम 6, इश्यू 9, सितम्बर 2020, *eo4192*

  Retrieved from*https://doi.org/10.1016/J.heliyon.2020, eo4142*
- ओलाटोमो, आर.ए.(2013), स्टडी हैबिट, सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड साइंस अचीवमेंट ऑफ पब्लिक एण्ड प्राइवेट जूनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट्स इन ओवी स्टेट,नाइजीरियन

  Retrieved.http:\\13603|13 8292.net|.handle.net.
- इरगिन, एवं के. डी. (2007), टू इक्जामिन द इफेक्ट्स ऑफ फाईव ई इंस्ट्रक्शन माडल ऑन द स्टूडेन्ट्स एकेडमिक सक्सेस इन फिजिक्स एजुकेशन. *G.U. gazi education faculty magazine 27(2), 191-209.*

- ए, टी. (2021) *स्टडी हैविट्स ऑफ अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स ड्यूरिंग पेनडेमिक ऑफ कोविड-19 जर्नल ऑफ लर्निंग एण्ड इन्स्ट्रक्सशनल स्टडीज*: 1(1), 37-51,

  Retrieved fromhttps://doi.org/10.46637Jlis. V1i1.5

- एनढाले भोसेव सोपन (2022), *इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टविस्ट एप्रोच इन्हैसिंग एकेडमिक एचीवमेन्टीन हिस्ट्री अमंग 7 स्टेण्डर्ड स्टूडेन्ट्स,* एजूकेशनल रेसुगेन्स जर्नल वाल्यूम 5 इश्यू 1, जुलाई 2022, ISS N 2581-9100Retrieved from- https://eoeddypvp.edu.in/educational resugence-Journal

- एस.एन. एवं जी.आर. (2021), माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, सांवेगिक बुद्धि, आत्मप्रत्यय एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, कानपुर : छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, Retrieved from-http://hdl.handle.net/10603/339511

- एन.सी.ई.आर.टी.(2005), *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क*

  Retrieved from- http://www.ncert.nic.in 16।08।2012.

- एम., एस., ए., जी., एवं एस. एफ. (2020)- *एप बेस्ट स्टडिंग हैबिटबिल्डिंग रिड्यूसिस इम्पेयरमेण्ट्स ड्यूरिंग*:जर्मनी बीलेफेल्ड विश्वविद्यालय

  Retrieved from*http://doi.org/ 10.3389/fps49.2020.00167*

- *कन्स्ट्रक्टविस्ट एप्रोच इन्हैस द लंर्निग ए सर्च ऑफ रिएलिटी जर्नल एजुकेशनएण्ड* **प्रैक्टस***ISSN 2222-1735 (Paper) ISSN 2222 – 288 (Online) vol 17, No. 25 2016.*

- कडजेरा, सी. एम. (2006), यूज ऑफ़ इंस्ट्रक्शनल टेक्नोलॉजी इन टीचर ट्रेनिंग कॉलेज इन मलावी डॉक्टरल डिजेर्टेशन बर्जेनिया पॉलिटेक्निक स्टूडेंट्स एंड स्टेट यूनिवर्सिटी

- कुमार, ए. (2015), *शिक्षा मनोविज्ञान*. पटना : भारती भवन.

- कपिल, एच.के. (2012), *अनुसंधान विधियाँ व्यवहार विज्ञानों में प्रकाशक आगरा*: एच.पी.भार्गव बुक हाउस.

- कपिल, एच.के. (2002), *अनुसन्धान विधियाँ*.ए.पी. आगरा :भार्गव बुक हाउस.
- एस., जी., आर. (2021),*माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, सांवेगिक बुद्धि, आत्मप्रतयय एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन*
- कीरातीचेमरोन,.ड्ब्लू. (2010), डेवलपिंग ए सांइस लर्निंग यूनिट टू इन्हैस सैकेण्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स अन्डरस्टैडिंग ऑफ ए केमिकल शीएम्शन बेस्ट ऑन द कन्स्ट्रक्टिविस्ट ऑफ एप्रोच पी. एच. डी., थाईलैंड थीसीस ऑफ ग्रेजुएट महीदोलयूनीवसिर्टी, Retrieved from-https:\\www.|imanidol.ac.thesis|2552|edu 38|4937429.post.on 09|09|2012.
- के, एवं के, ए.के.(2011), *इफेक्ट ऑफ कंस्टक्टिविस्ट प्राब्लम-वेस्ड लर्निंग एप्रोच ऑन द एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ ग्रेसोशल साइन्स पीपुल्स.* आगरा :दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)दयालबाग, Retrieved fromhttp:// net.handle.net/ 10603|207059.
- कुलश्रेष्ठ, एस. पी. एवं कुलश्रेष्ठ ए.के.(2015), *शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार.*, मेरठ : आर.लाल. बुक डिपो पब्लिकेशन.
- कौल, एल .(1998),*शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली.*नयी दिल्ली :विकास पब्लिशिग हाउस प्रा.लि.
- गुप्ता, एस. पी., (2015*), अनुसंधान संदर्शिका.* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, एस.पी.(2003), *आधुनिक सांख्यिकी विधियाँ.* इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, एस.पी. (2013), *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.* इलाहाबाद :शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, एस. पी. (2002), *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.* इलाहाबाद :शारदा पुस्तक भवन.
- गौतम, ए.एवं कुलश्रेष्ठ ए. के. (2011), *डेवलपमेंड ऑफ कंस्ट्रक्टविस्म एप्रोच वेस्ड इंस्ट्रक्शनल मटेरियल फ़ॉर बायोलाजी स्टूडेन्ट्स.*आगरा:दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी) दयालबाग.

Retrieved fromhttp:// net.handle.net/ 10603|207066.

- टेडली. सी. एवं यू. एफ. (2007), मिक्स मैथेड सेम्पलिंग. जर्नल ऑफ मिक्स मैथेड रिसर्च वैल्यूम : 1 (1) सेज, पब्लिकेशन.
- डूमन.(2010), डेफिनेशन ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट Retrieved fromhow. Com/about4740750define academic performancehtmlon2 दिसंबर 2010.
- त्यागी, एम.(2012),*प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, सृजनात्मक चिंतन तथा शैक्षणिक अभिप्रेरणा पर रचनावादी शिक्षण का प्रभाव.* गाजियाबाद मेरठ :सी. सी. एस. यूनीवर्सिटी.
- पचौरी, जी.(2015), *विश्व के महान शिक्षाशास्त्री.* दिल्ली : आर लाल बुक डिपो.
- पटेल, आर., सिंह, सी.(2019), *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संस्कृत विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर निर्माणवादी उपागम की प्रभावशीलता का अध्ययन.* Retrieved from*http:// net.handle.net/ 19 603|207096.*
- मध्यवर्ती चर, *मांनविकी सामाजिक और शिक्षा के इंटरनेशनल जर्नल. 1110, 47 -55 , 2014.*
- राय, पी. (2005), *अनुसंधान परिचय.* आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
- वर्मा,आर.एवं कुलश्रेष्ठ ए.के.(2017), *इफेक्ट ऑफ कन्स्ट्रक्टविस्ट एप्रोच ऑन एकेडमिक एचीवमेण्ट लैव कम्पटेन्स एण्ड एटीटयूट ऑफ स्टूडेण्टस टूवार्डस कैमिस्ट्री एट सीनियर सेकेण्ड्री स्तर.* Retrieved from.*http:\\10603|228292.net|.handle.net|*
- शर्मा, आर.ए. (2008), *शिक्षा अनुसंधानआर.* मेरठ : लाल बुक डिपो.
- शर्मा, एम., एस. एवं सक्सेना, आर. (2022), *उच्च माध्यमिक स्तर के विधियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययन राजस्थान* : वनस्थली विद्यापीठ, retrieved fromhttp://hdl.handle.net/10603/360432.
- सरीन,ए.एवं सरीन, ए.(2008), *शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ.*आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.

- सिंह,ए.के.(2010), *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*.यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास.
- सिह, जी. (2009), *शैक्षिक एवं मानसिक मापन*.मेरठ : आर.लाल बुक डिपो.
- Website- www.Shodhganga.infibnet.ac.in
- www.ncert.nic.in/Publication/Jouarnals/Hindi.htm